UGC serial No. 11409

ISSN 2394-2665

अरुणागम

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुशंसित

मूल्यांकनपरक शोध पत्रिका

संयुक्तांक : 2015-16

प्रकाशक

शोध एवं विकास प्रकोष्ठ

जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, पासीघाट

अरुणाचल प्रदेश 791103

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

संपादक की कलम से	डॉ. शिवानन्द झा	4
राष्ट्रभाषा हिंदी और जनपदीय बोलियां	–प्रो. नन्द किशोर पांडेय	5
हिंदी हैं हम.... अब नहीं रहेंगे	डॉ. हरीश कुमार शर्मा	13
उपेक्षित प्रश्न : जनजातीय भाषा सर्वेक्षण, संरक्षण	प्रोफेसर हेमराज मीणा 'दिवाकर'	19
वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी का बदलता स्वरूप	क्षेत्रिमयुम विद्यारानी देवी	22
भक्ति और पर्यावरण के परिप्रेक्ष्य में 'गंगालहरी'	–प्रो. आरिफ नजीर	24
श्रीमंत शंकरदेव और उनका 'केलि-गोपाल'	–डॉ. अनुशब्द	32
समकालीन हिंदी कहानी	डॉ. अखिलेश कुमार 'शंखधर' / लोइङम रोमी देवी	36
लोइजम रोमी देवी'' मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'फरिश्ते निकले' के यक्ष-प्रश्न	–डॉ. विश्वजीत कुमार मिश्र	42
पीली छतरी वाली लड़की : स्त्री पीड़ा का आख्यान	आशुतोष	50
नासिरा शर्मा के उपन्यास 'शाल्मली' में वर्णित पुरुष मानसिकता	अपराजिता राय	57
शब्द-कुंज के शीर्षस्थ आलोचक : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	डॉ. सत्यप्रकाश पाल	63
रचनाकार, जब आलोचक होता है....	प्रदीप त्रिपाठी	67
नोक्ते जनजाति के लोरी गीतों की भाव-सत्ता	डॉ. अरुणकुमार पांडेय	74
राजस्थानी और न्यीशी लोक-गीतों में स्त्री पक्ष	डॉ. जोराम यालाम नाबाम	79
ब्री-बी-गी मिरूपी ची औसे	मेंडिको मेन्जो	84
भारतीय नारी	–डॉ. हरिनिवास पांडेय	87
हिंदी में दलित प्रश्न : पत्रिकाएं एवं पुस्तकें	–डॉ. इकरार अहमद	90
भूगोल में प्रादेशिक नियोजन की संकल्पना	–डॉ. शिवानंद झा	95

Scanned with CamScanner

श्रीमंत शंकरदेव और उनका 'केलि-गोपाल'

–डॉ. अनुशब्द

श्रीमंत शंकरदेव असमिया साहित्य, समाज एवं संस्कृति के पुरोधा हैं। वे असम के सांस्कृतिक लोकनायक हैं। उनके समय से ही असम में नवजागरण का शंखनाद हुआ। भक्ति की गंगा बहने लगी और नववैष्णव धर्म की नींव सुदृढ़ हुई। शंकरदेव अपनी प्रगतिशील एवं युगांतकारी सोच के कारण असम के लिए ही नहीं बल्कि समग्र भारतवर्ष के लिए अपूर्व, बहुआयामी, उज्ज्वल व्यक्तित्व के अधिकारी सिद्ध हुए। उनके महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए उनके शिष्य-सखा माधवदेव कहते हैं कि "जग जन तारण देव नारायण शंकर ताकेरि अंश"[1]। अर्थात शंकरदेव उस परमात्मा के अंश हैं जो इस संसार के समस्त प्राणियों का कल्याण करते हैं, उद्धार करते हैं। वास्तव में शंकरदेव असमिया समाज और साहित्य के देदीप्यमान आलोकस्तंभ हैं। वे एक साथ कलाकार, समाज सुधारक, नाटककार, दार्शनिक, संगीतज्ञ, कवि, चित्रकार, शिल्पकार, लोकनायक, संत आदि सब कुछ हैं। उनकी रचनाओं में एक तरफ राष्ट्रीय एकता का स्वर मुखर है। तो दूसरी तरफ मानुष प्रेम की भावना सर्वोपरि है। शंकरदेव के रचना-संसार में मुख्य रूप से भक्ति-प्रदीप, गुणमाला, हरिश्चंद्र उपाख्यान, कीर्तनघोषा, बरगीत, तोटय और भटिमा शामिल हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने छह प्रसिद्ध नाटकों भी की रचना है। रचना-क्रम की दृष्टि से वे इस प्रकार हैं–पत्नी-प्रसाद, काली-दमन, 'केलि-गोपाल', रुक्मिणी-हरण, पारिजात-हरण और राम-विजय।

'केलि-गोपाल' शंकरदेव की तीसरी नाट्य-कृति है। इसकी रचना उन्होंने संभवतः 'पाटबाउसी'[2] नामक स्थान में रहते हुए की थी। नाटक की कथावस्तु भागवत पुराण के रास-क्रीड़ा प्रसंग पर आधारित है। एक तरह से यह नाटक भागवत पुराण के रास पंचाध्याय की विषय-वस्तु का नाट्य रूपांतर है। हालांकि श्रीमंत शंकरदेव ने इसमें कुछ मौलिक उद्भावनाएं भी की हैं। उन्होंने हरि-भक्ति प्रदर्शन हेतु तथा कृष्ण के लोकरक्षक रूप को उद्घाटित करने के लिए इसमें शंखचूड़ वध की कहानी को अलग से जोड़ा है। 'केलि-गोपाल' पर जयदेव के 'गीतागोविंद' का भी प्रभाव परिलक्षित होता है। इस नाटक के अंत में प्रस्तुत विष्णु के दशावतार वर्णन संबंधी भटिमा (स्तुतिमूलक गीत) "मीनरूपे प्रलय पयसि सत्यव्रत जो तारिले"[3] (मीन रूप धारण कर प्रलय काल में सत्यव्रत राजा का उद्धार किया) के साथ जयदेव के प्रथम अष्टपदी 'प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम'[4] की सादृश्यता इस संदर्भ में देखने योग्य है। इसके अलावा नाटक के एक-दो श्लोकों में जयदेव के काव्य का प्रभाव लक्षित होता है–

केलि-गोपालः निशम्य गर्वे गोविन्दो गोपिनां प्रेमवृद्धये
राधां विधाय हृदये तत्याज व्रजयोषितः[5]
गीत गोविंदः कन्सारिरपि संसार वासनाबंध शृंखलाराधामाधाय हृदये तत्याज व्रजसुंदरीः
गीत गोविंदः पीनपयोधर भर भरेण हरिं परिरभ्य सारगम[6]
केलि-गोपालः गोपिपीन पयोधर धरिषण चंचल करयुगशाली

भागवत पुराण के श्लोकों का भी प्रभाव 'केलि-गोपाल' पर पड़ा है। भागवत पुराण एवं श्रीधर स्वामी के

CS Scanned with CamScanner